

* निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के लिए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए।

[5]

1. लेखक ने सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य कहाँ से देखा?

(A) विवेकानंद चट्टान से

(B) अरब सागर की ओर के ऊँचे टीले से

(C) पच्छिमी क्षितिज से

(D) सैंड हिल से

उत्तर : (ख) अरब सागर की ओर के ऊँचे टीले से

स्पष्टीकरण:

लेखक पहले 'सैंड हिल' पर पहुँचता है, लेकिन वहाँ से उसे पूरा दृश्य स्पष्ट नहीं दिखाई देता क्योंकि एक ऊँचा टीला बीच में आ रहा था। इसलिए वह आगे बढ़ते हुए कई टीलों को पार करता है और अंततः एक ऐसे ऊँचे टीले पर पहुँचता है जहाँ से उसे पश्चिमी क्षितिज का पूरा खुला विस्तार दिखाई देता है। यही टीला अरब सागर की दिशा में था। वहीं बैठकर उसने सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य देखा, जब सूर्य धीरे-धीरे समुद्र में डूबता हुआ दिखाई देता है। इसलिए विकल्प (ख) सबसे उपयुक्त है।

2. "मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं ही हूँ।" यह कथन लेखक की किस मनःस्थिति को दर्शाता है?

(A) मौन हो जाना

(B) विस्मित हो जाना

(C) भ्रमित हो जाना

(D) आशंकित होना

उत्तर : (ख) विस्मित हो जाना

स्पष्टीकरण:

लेखक जब समुद्र, लहरों और अनंत क्षितिज के अद्भुत दृश्य को देखता है, तो वह उसकी विशालता और सुंदरता में पूरी तरह डूब जाता है। उस समय वह अपने अस्तित्व तक को भूल जाता है और स्वयं को उस दृश्य का एक हिस्सा महसूस करता है। यह स्थिति किसी डर या भ्रम की नहीं, बल्कि आश्चर्य और अद्भुत अनुभूति की है। इसलिए यह कथन लेखक के अत्यधिक विस्मित (आश्चर्यचकित) होने की मनःस्थिति को दर्शाता है।

3. "मैंने, सिर्फ मैंने उस चोटी को पहली बार सर किया हो।" इस कथन में कौन-सा भाव व्यक्त होता है?

(A) करुणा

(B) विनम्रता

(C) आत्मीयता

(D) संतुष्टि

उत्तर : (घ) संतुष्टि

स्पष्टीकरण:

लेखक कई कठिन टीलों को पार करके अंततः उस ऊँचे टीले पर पहुँचता है, जहाँ से उसे सूर्यास्त का सुंदर दृश्य दिखाई देता है। वहाँ पहुँचकर उसे अपने प्रयास की सफलता का अनुभव होता है और वह गर्व व खुशी महसूस करता है। "मैंने, सिर्फ मैंने उस चोटी को पहली बार सर किया हो" कथन में उसी उपलब्धि और तृप्ति की भावना झलकती है। इसलिए यह संतुष्टि (सफलता से मिलने वाली खुशी) का भाव व्यक्त करता है।

4. "शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति" वाक्य में वर्णन है —

(A) बलखाती लहरों का

(B) सागर की व्यापकता का

(C) सूर्यास्त के दृश्य का

(D) पश्चिमी क्षितिज का

उत्तर : (ख) सागर की व्यापकता का

स्पष्टीकरण:

यह वाक्य उस समय आया है जब लेखक चारों ओर फैले समुद्र को देख रहा है। उसे हर दिशा में जल ही जल दिखाई देता है और सागर की असीम विशालता तथा उसकी शक्ति का अनुभव होता है। "शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति" में समुद्र की अनंत व्यापकता और उसकी ताकत का वर्णन किया गया है। इसलिए यह सागर की व्यापकता को दर्शाता है।

5. लेखक की कन्याकुमारी की यात्रा का वर्णन पढ़कर कहा जा सकता है कि —

- (A) यह कन्याकुमारी के मौसम को प्रमुखता से वर्णित करता है।
- (B) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।
- (C) यह केवल यात्रा के रोमांच पर केंद्रित है।
- (D) इसमें कन्याकुमारी का काल्पनिक वर्णन मिलता है।

उत्तर : (ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।

स्पष्टीकरण:

लेखक ने अपनी यात्रा का वर्णन केवल स्थान या मौसम तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसने हर दृश्य—समुद्र, लहरें, चट्टानें, सूर्योदय और सूर्यास्त—को अपनी भावनाओं और अनुभूतियों के साथ प्रस्तुत किया है। वह कहीं विस्मित होता है, कहीं डरता है, कहीं संतुष्टि महसूस करता है। इससे पाठ बहुत जीवंत और वास्तविक लगता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह यात्रा-वर्णन लेखक की गहरी अनुभूतियों से जुड़ा हुआ है, न कि केवल जानकारी या रोमांच तक सीमित।

* निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

[15]

6. यात्रियों का समूह सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए सैंड हिल की ओर बढ़ता जा रहा था लेकिन लेखक सैंड हिल पर पहुँचकर कुछ देर रुकने के बाद दूसरे टीले की ओर बढ़ने लगा। उसके ऐसा करने के पीछे मूल कारण क्या था?

उत्तर : लेखक सैंड हिल पर पहुँचकर कुछ देर रुका, लेकिन उसे वहाँ से सूर्यास्त का पूरा और स्पष्ट दृश्य दिखाई नहीं दे रहा था। सैंड हिल के सामने एक और ऊँचा टीला था, जो अरब सागर की ओर के विस्तार को ढक रहा था। लेखक चाहता था कि वह सूर्यास्त को पूरे विस्तार के साथ, बिना किसी बाधा के देख सके। उसके मन में प्रकृति के इस अद्भुत दृश्य को पूर्ण रूप से अनुभव करने की तीव्र इच्छा थी। इसलिए वह संतुष्ट नहीं हुआ और आगे बढ़ने का निर्णय लिया। उसने कई टीलों को पार किया, भले ही उसकी टाँगें थक रही थीं, लेकिन उसका मन नहीं थका। अंततः वह एक ऐसे ऊँचे टीले पर पहुँचा, जहाँ से उसे पूरा दृश्य साफ दिखाई दिया। इस प्रकार, पूर्ण और सुंदर अनुभव की चाह ही उसके आगे बढ़ने का मुख्य कारण थी।

7. लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय लोगों के विषय में क्या-क्या बताया?

उत्तर : लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय लोगों के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण बातें बताई हैं। वह बताता है कि वहाँ लगभग आठ हजार की आबादी में चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक बेरोजगार हैं, जिनमें लगभग सौ ग्रेजुएट भी शामिल हैं। ये युवक नौकरी की तलाश में लगातार अर्जियाँ देते रहते हैं और आपस में चर्चा व बहस करते हैं। जीविका चलाने के लिए वे छोटे-मोटे काम करते हैं, जैसे फोटो-एलबम बेचना या सीपियों से बनी वस्तुएँ बेचना। लेखक ने यह भी बताया कि वे समुद्र से मिलने वाली चीज़ों, जैसे सीपियों का गूदा, खाकर अपना गुजारा करते हैं। इसके साथ ही वे दार्शनिक विषयों पर चर्चा करते हैं। इससे पता चलता है कि उनके जीवन में संघर्ष के साथ-साथ विचारशीलता भी है।

8. “अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया” इस पंक्ति में ‘प्रयत्न की सार्थकता’ से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : इस पंक्ति में ‘प्रयत्न की सार्थकता’ से अभिप्राय लेखक के उस लगातार किए गए प्रयास की सफलता से है, जिसके माध्यम से वह सही स्थान तक पहुँचना चाहता था। लेखक सैंड हिल से संतुष्ट नहीं हुआ और बेहतर दृश्य की खोज में एक के बाद एक कई टीलों को पार करता गया। रास्ता कठिन था, टाँगें थक रही थीं, फिर भी उसने हार नहीं मानी। अंततः वह एक ऐसे ऊँचे टीले पर पहुँच गया, जहाँ से उसे सूर्यास्त का पूरा और सुंदर दृश्य स्पष्ट दिखाई दिया।

जब उसे अपने उद्देश्य की पूर्ति हो गई, तो उसे अपने प्रयास सफल और सार्थक लगे। इसी संतोष और उपलब्धि की भावना के कारण वह वहाँ बैठ गया, जैसे उसने कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर ली हो।

9. यात्रा-वृत्तांत में आए उन दृश्यों के विषय में लिखिए जिनका अनुभव लेखक के लिए बिल्कुल नया था।

उत्तर : लेखक की कन्याकुमारी यात्रा में कई ऐसे दृश्य थे जो उसके लिए बिल्कुल नए और अद्भुत थे। सबसे पहले, तीन समुद्रों—अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी—का संगम और वहाँ की प्रचंड लहरों का दृश्य उसके लिए अनोखा अनुभव था। समुद्र की असीम व्यापकता और लहरों की शक्ति ने उसे गहराई से प्रभावित किया। सूर्यास्त का बदलता रंग—सोने से लाल, फिर बैंगनी और अंत में काला—भी उसने पहली बार इतनी स्पष्टता से देखा। इसके अलावा, समुद्र तट की रेत में दिखाई देने वाले अनेक अनोखे और मिश्रित रंग उसके लिए बिल्कुल नए थे, जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था। 'विवेकानंद चट्टान' तक नाव से पहुँचना और वहाँ का अनुभव भी उसके लिए एक नया और रोमांचक अनुभव था।

10. यात्रा-वृत्तांत से ऐसे दो अंश चुनकर लिखिए जिससे लेखक की मानसिक दृढ़ता और हार न मानने की प्रवृत्ति का पता चलता है।

उत्तर : यात्रा-वृत्तांत में कई ऐसे अंश हैं जो लेखक की मानसिक दृढ़ता और हार न मानने की प्रवृत्ति को दर्शाते हैं। पहला अंश वह है, जब लेखक सैंड हिल से संतुष्ट नहीं होता और बेहतर दृश्य पाने के लिए एक के बाद एक कई टीलों को पार करता जाता है—“टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था।” यह वाक्य उसकी अटूट इच्छाशक्ति को स्पष्ट करता है।

दूसरा अंश तब का है, जब समुद्र का पानी बढ़ने लगता है और खतरे की स्थिति बन जाती है, फिर भी लेखक घबराकर रुकता नहीं, बल्कि साहस जुटाकर आगे बढ़ता है—“मैं दौड़ने लगा... एक ऊँची लहर से बचकर इस तरह दौड़ा जैसे सचमुच वह मुझे अपनी लपेट में लेने आ रही हो।” ये अंश उसकी हिम्मत और दृढ़ निश्चय को उजागर करते हैं।
